Prabhat Khabar (Date: 29/07/2019)

हैं. ये वर्षों से पटना के लोगों का मनोरंजन करते रहे हैं. ऐसे में टाइगर डे के अवसर पर हमने इनकी जिंदगी और दिनचर्या को समझने की कोशिश की. हमने जाना कि ये कब से यहां हैं, इनका नाम क्या है और ये क्या खाते हैं.

अपने शहर में भी रहते हैं पांच टाइगर

पटना जू के मुख्य आकर्षण हैं टाइगर

हमारी टीम जब इनके पास गयी तो देखा कि इन टाइगर ने जंगल से दूर विड़ियाघर में भी अपनी जिंदगी को जीना सीख लिया है.
हमने देखा कि टाइगर कभी पानी पी रहा था, तो कभी मस्ती कर रहा था बीच - बीच में ये दहाड़ भी रहे थे. इनकी दहाड़ दूर से ही सुनी जा सकती थी. इनकी दिनचर्या के कई रूप हमें यहां देखने को मिले.
पटना जू का मुख्य आकर्षण टाइगर का केज ही है. विड़ियाघर घूमने आये दर्शक और किसी जानवरों को देखे या न देखे, लेकिन टाइगर को देखे बिना नहीं जाते हैं. बच्चे तो यहां आते ही माता - पिता से टाइगर देखने की जिद करने लगते हैं.

दो नये टाइगर आने वाले हैं

यहां अभी पांच टाइगर हैं लेकिन आने वाले दिनों में एक जोड़ा और आने वाला है. जिसमें एक मेल और एक फीमेल होगा. दोनों को तमिलनाडु से मंगाया जायेगा. तब जा कर जू में टाइगरों की संख्या सात हो जायेगी. इसकी तैयारी चल रही है. हालांकि ये कब आयेंगे. इसकी तारीख अभी निर्धारित नहीं की गयी है.

जू में आने वाले पर्यटक टाइगर को देखे बिना नहीं जाते घर

देवी (येल्लो टाइगर) पटना जू में रह रही देवी मादा है. इसका जन्म भी चार मार्च 2014 को ही हुआ था. जन्म से ही देवी पटना जू में रह रही है. देवी और भवानी का जन्म एक साथ हुआ था. दोनों की देख-रेख एक साथ होती है. अब बड़े होने पर दोनों अलग-अलग केज में रहते हैं. यह प्रति दिन 12 से 14 केजी मांस खा जाती है.

स्वर्णा (व्हाइट टाइगर) विड़ियाघर में मौजूद स्वर्णा मादा है, जो कि देवी, भवानी और बाघी की माता है. स्वर्णा का जन्म एक जनवरी 2009 में हुआ था. इसकी उम्र दस साल तीन महीना है. इसे तिरूपति से मंगाया गया था. काफी दिनों से स्वर्णा यहां रह रही है. वह यहां तीन बच्चों को भी जन्म दे चुकी है.

भीमा(येलो टाइगर) पटना के विड़ियाघर में मौजूद टाइगर भीमा नर है, जो देवी, भवानी और बाघी का पिता भी है. भीमा का जन्म 14 अप्रैल 2006 में हुआ था. यह 13 साल तीन महीने का है. इसे हैदराबाद से मंगाया गया था. यह लंबे समय से पटना जू की पहचान बना हुआ है. भीमा हर दिन 18 से 20 केजी तक मांस खा जाता है. इसके खान-पान में कोई कमी नहीं रहती है. भीमा अभी भी काफी फुर्तीला टाइगर है.

बाघी (व्हाइट टाइगर) विड़ियाघर में मौजूद बाघी भी मादा है. इसका जन्म 13 मार्च 2017 को यहां हुआ था. इसकी उम्र कुल दो साल चार महीने है. इसका जन्म विड़ियाघर में ही हुआ है. बाघी सभी टाइगरों में सबसे कम उम्र की है. इसे पहली बार दर्शकों के सामने 29 जुलाई 2017 को सामने लाया गया था. यह प्रति दिन 10 से 12 केजी मांस खा जाती है.

भवानी(व्हाइट टाइगर) यहां रह रही भवानी मादा है. भवानी के माता-पिता स्वर्णा और भीमा है. इसका जन्म चार मार्च 2014 को विड़ियाघर में ही हुआ था. इसकी उम्र पांच साल पांच महीने है. जन्म से ही भवानी पटना जू में रह रही है. भवानी विड़ियाघर आने वालों के बीच काफी लोकप्रिय है. यह प्रति दिन 12 से 14 केजी मांस खाती है.

जू में मौजूद है एक मेल और चार फीमेल टाइगर

पटना जू में अभी पांच टाइगर हैं, सभी स्वस्थ है. इनकी देख-रेख के लिए यहां खास इंतजाम किया गया है. इन्हें समय - समय पर खाने के लिए मांस दिया जाता है. आमतौर पर ये 12 से 20 किलोग्राम तक मांस रोज खाते है. इनके घरों में इनकी सुविधा का खास ख्याल रखा गया है. विड़ियाघर प्रशासन ने इन्हें प्राकृतिक माहौल देने की पूरी कोशिश की है. खाने के बाद मन होने पर ये अपने केज में टहलते रहते है. यहां मौजूद टाइगर में सबसे पुराने स्वर्णा मादा और भीमा नर है. दोनों के तीन बच्चे है. तीनों मादा है. इसमें देवी, भवानी और बाघी शामिल है. पांचों यहां लंबे अरसे से रह रहे है.

क्या कहते हैं अधिकारी

कई दिनों से टाइगर डे की तैयारी चल रही है. टाइगर के संरक्षण में पटना का विड़ियाघर हर संभव प्रयास कर रहा है. यहां दर्शकों को टाइगर के महत्व की जानकारी दी जाती है. जू एक सशक्त माध्यम है, जिसके जरिये दर्शक टाइगर और वाइल्ड लाइफ के बारे में जान सकते हैं.

अमित कुमार, डायरेक्टर पटना जू